रौबर्ट

एक छोटा घोड़ा



रौबर्ट

एक छोटा घोड़ा





रौबर्ट एक छोटा, प्रसन्नचित्त घोड़ा था.
वह एक फार्म में रहता था.
वह अपने माता और पिता
के साथ रहता था.





एक दिन रौबर्ट के घर में पार्टी थी.
उस दिन उसका जन्मदिन था.
फार्म के उसके सारे मित्र
आये हुए थे.



वह एक बड़ा केक लाये थे.
“जन्मदिन की बधाई हो, रौबर्ट,”
उसके मित्रों ने कहा,
“जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई.”



केक बहुत ही बढ़िया था.
उसके ईर्द-गिर्द लाल गुलाब रखे थे.
रौबर्ट को लाल गुलाब अच्छे लगते थे.
वह अपनी नाक
एक गुलाब के पास ले गया.
उसने ज़ोर से सूंघा.





तब रौबर्ट को एक अनोखा अहसास हुआ.
उसकी आँखों में खुजली होने लगी.
उसकी नाक में खुजली होने लगी.
और फिर...........





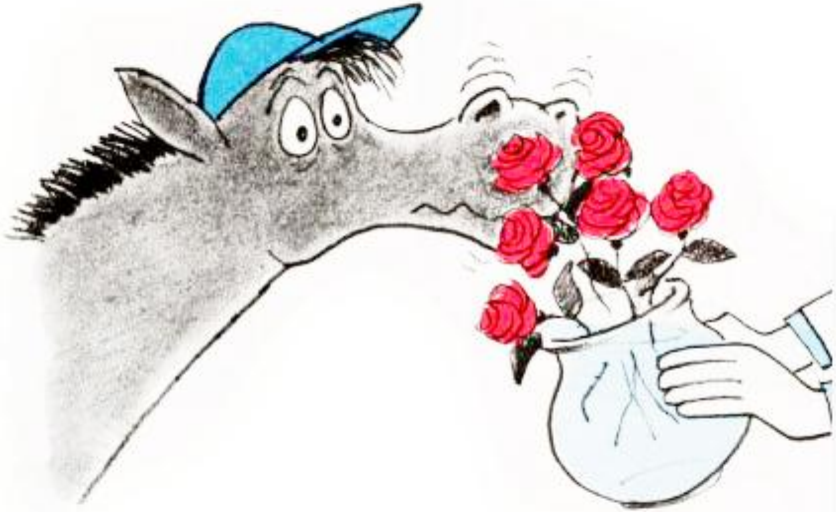
“केरछूऊऊ!” उसने झींक मारी.
क्या झींक थी!
उसके मित्र उछल कर ऊपर गये.
केक भी उछल कर ऊपर गया.
और रौबर्ट सीधा नीचे जा गिरा.

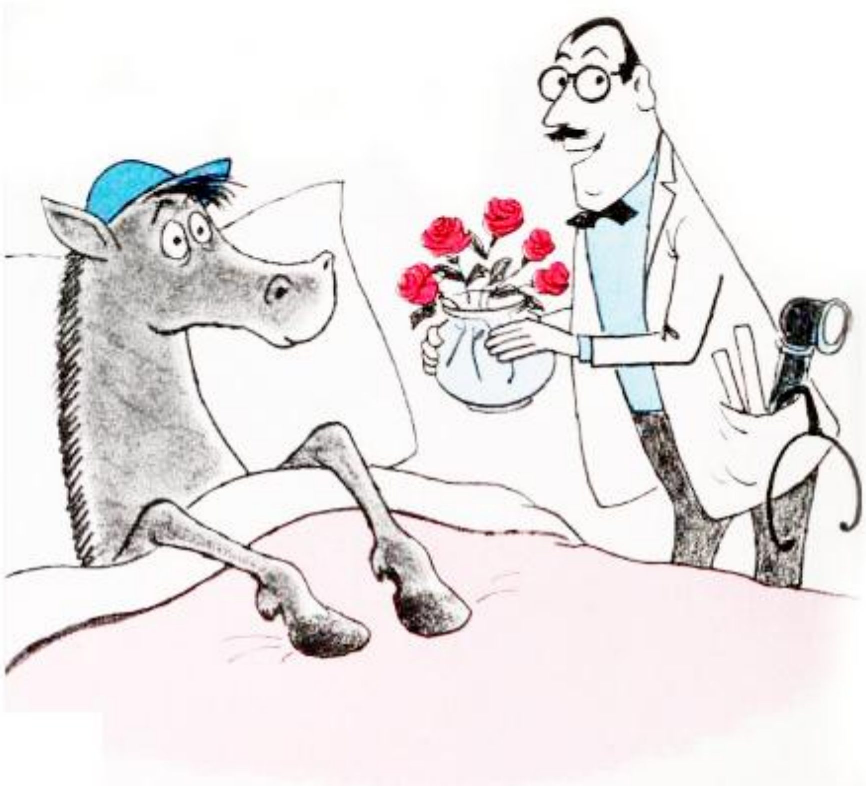
उसकी माँ ने डाक्टर को बुलाया.
डाक्टर ने रौबर्ट की जांच की.

"बोलो, आ," डाक्टर ने कहा.
"आ," रौबर्ट ने कहा.
"आआआ!" डाक्टर ने कहा.
"मैं जानता हूँ कि इसे छींक क्यों आई."



“मैं जानता हूँ कि मैं सही हूँ,” डाक्टर ने कहा.
“अभी तुम समझ जाओगे.
इधर, रौबर्ट.
इसे थोड़ा सूंघो.”





रौबर्ट ने गुलाब के फूलों पर
अपनी नाक रखी.
उसने थोड़ा-सा सूंघा.
उसकी नाक में फिर खुजली होने लगी.
उसकी आँखों में फिर खुजली होने लगी.

“केरछूऊऊ!” रौबर्ट छींका
धड़ाम से खिड़की टूट गई.
धड़ाम से दरवाज़ा टूट गया.
गुलाब उछल कर ऊपर गये.
और डाक्टर सीधा नीचे जा गिरा.




“मैं सही था,” डाक्टर ने कहा.
“गुलाब तुम्हारे लिए बहुत बुरे हैं.
इस फार्म में बहुत ज़्यादा
गुलाब हैं.
तुम्हें इन से दूर जाना चाहिए.
तुम्हें नगर चले जाना चाहिए.”





इसलिए रौबर्ट को वहाँ से जाना पड़ा.
“अलविदा,” उसने अपने
माता और पिता से कहा.
“नगर जाकर मैं अच्छे से रहुँगा.
मैं कोई काम करुंगा.
मैं कोई नौकरी ढूंढ लूँगा.”

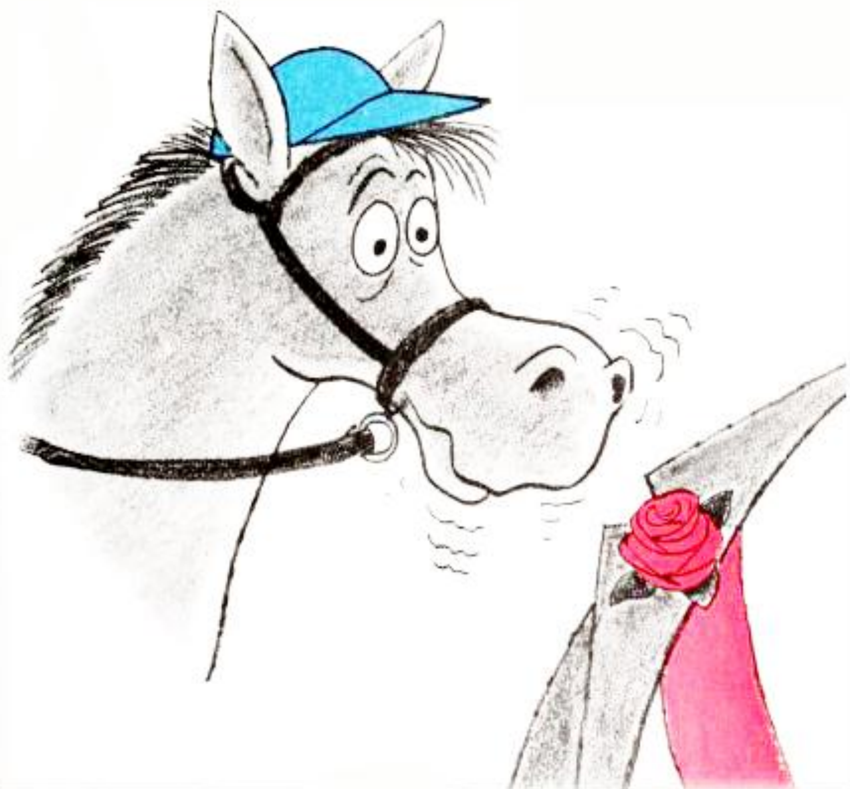
रौबर्ट ने नगर में काम ढूंढ ही लिया.
वह एक दूध वाले के लिए काम करने लगा.
वह दूध वाले और उसकी वेगन को
सारे नगर में ले जाता.



यह अच्छा काम था.
और रौबर्ट प्रसन्न था.
रौबर्ट को ऐसा काम करना
अच्छा लगता था.

एक गुलाब!
और बिलकुल उसकी नाक के नीचे!
रौबर्ट को वही अनोखा अहसास फिर से हुआ.
उसकी नाक में खुजली होने लगी.
और उसकी आँखों में खुजली होने लगी.
और..............





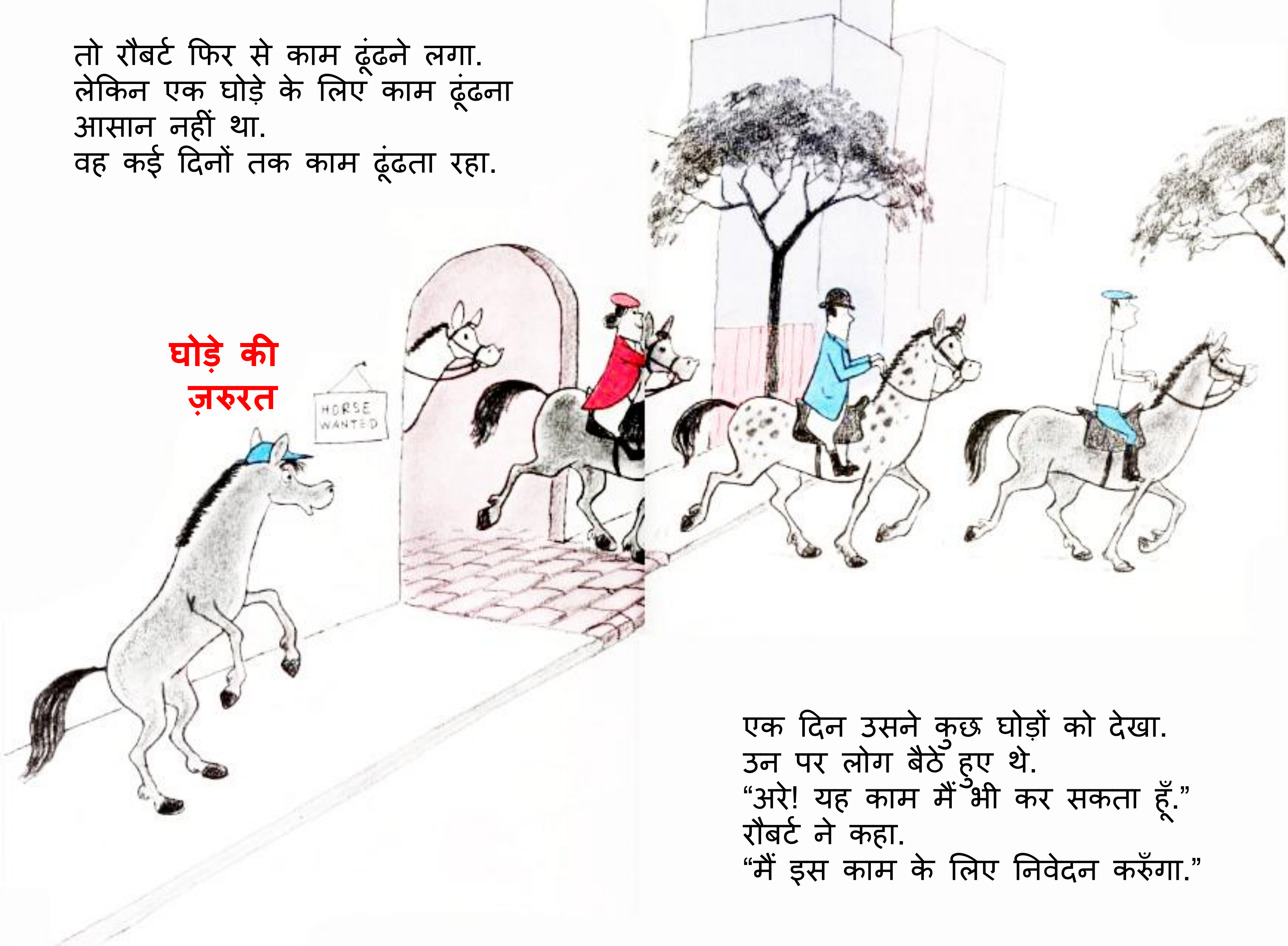
फिर एक दिन एक आदमी रौबर्ट के
बिलकुल करीब से चल कर गया.
उस आदमी ने अपने कोट में
एक फूल लगा रखा था.
कोट में लगा फूल गुलाब था.

“भागो यहाँ से!”
दूध वाले ने रौबर्ट को कहा.
“अब तुम मेरे लिए
काम नहीं कर सकते.”



“केरछूऊऊ!” रौबर्ट छींका
धमाके के साथ वेगन चूरचूर हो गई.
छपाक से दूध बह गया.
दूध वाला उछल कर ऊपर गया.
और जिसने कोट में गुलाब लगा रखा था
वह सीधा नीचे जा गिरा.

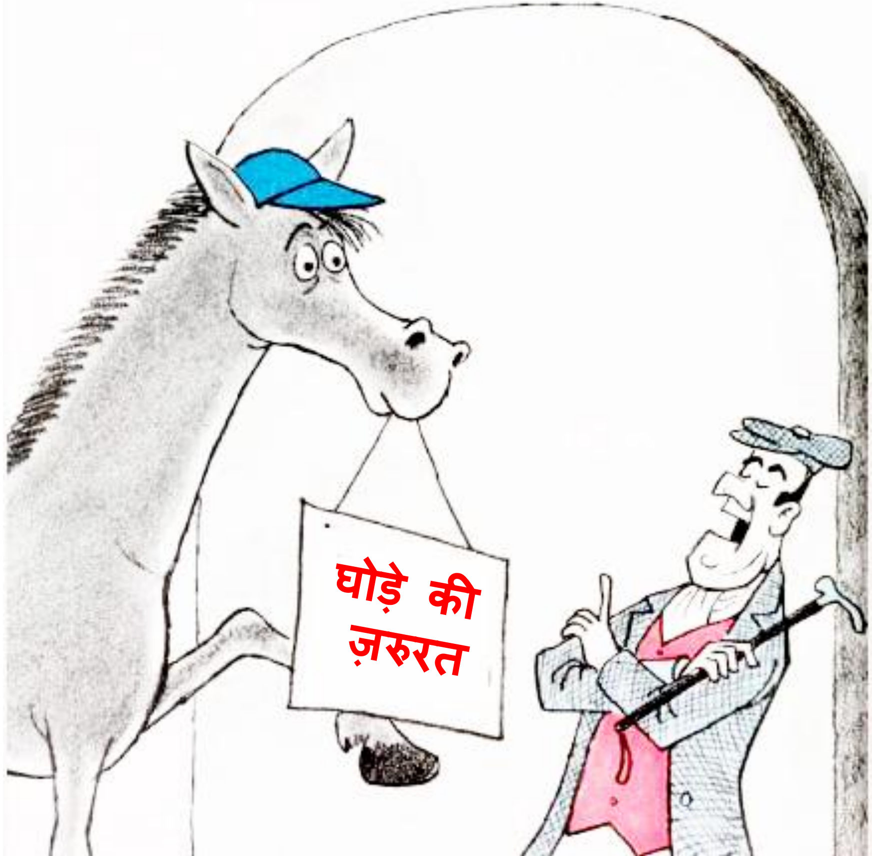
तो रौबर्ट फिर से काम ढूंढने लगा.
लेकिन एक घोड़े के लिए काम ढूंढना
आसान नहीं था.
वह कई दिनों तक काम ढूंढता रहा.



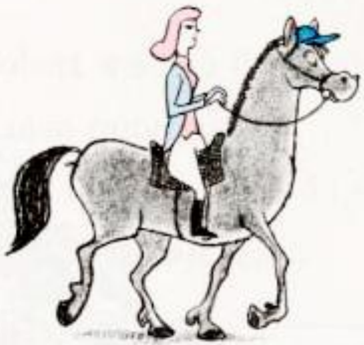
एक दिन उसने कुछ घोड़ों को देखा.
उन पर लोग बैठे हुए थे.
“अरे! यह काम मैं भी कर सकता हूँ.”
रौबर्ट ने कहा.
“मैं इस काम के लिए निवेदन करूँगा.”

रौबर्ट दरवाज़े के पास गया.
एक आदमी दरवाज़े से बाहर आया.
"तुम एक अच्छे घोड़े लगते हो,"
उस आदमी ने रौबर्ट से कहा.





"तुम मेरे लिए काम कर सकते हो.
लेकिन तुम्हें खूब मेहनत करनी पड़ेगी.
जो कुछ भी तुम्हें कहा जायेगा
वह सब तुम्हें करना पड़ेगा."



तो रौबर्ट फिर से काम करने लगा.
उसने वही किया जो उसे कहा गया.
जब उसे धीरे चलने के लिए कहा गया
तब वह धीरे चला.



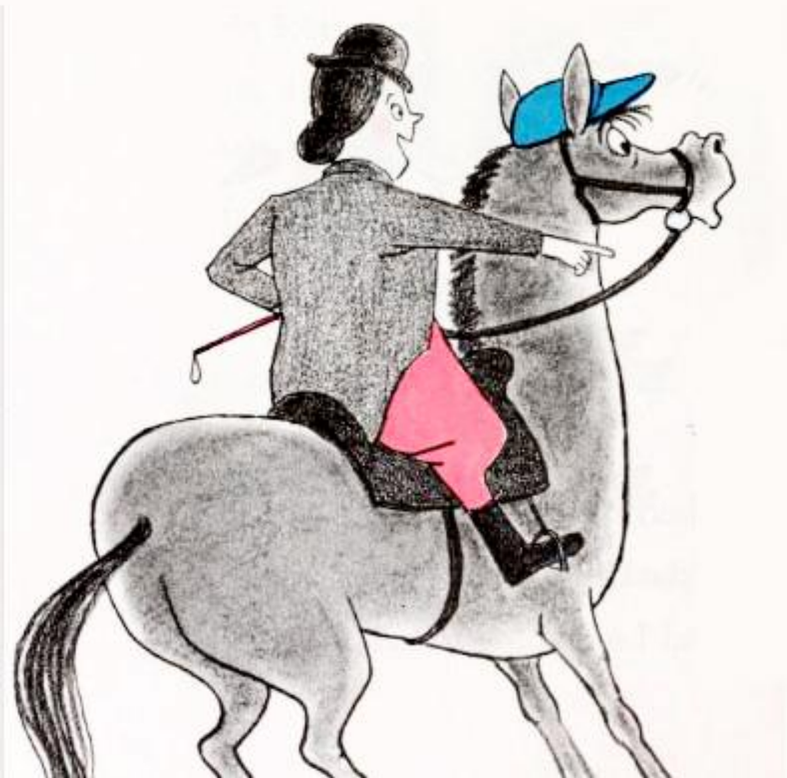
जब उसे तेज़ दौड़ने के लिए कहा गया
तब वह तेज़ दौड़ा.



जो कुछ उसे कहा गया
रौबर्ट ने वह सब किया.
“मुझे यह काम पसंद है,” रौबर्ट ने कहा.
“और यह काम मैं करता रहूंगा.”

फिर एक दिन वह एक औरत को
सवारी कराने ले गया.
सब ठीक ही चल रहा था.
लेकिन अचानक.......

"देखो!" औरत ने कहा.
"उन सुंदर गुलाबों को देखो.
मुझे वह गुलाब चाहियें.
रॉबर्ट, मुझे अभी वहाँ ले चलो, तुरंत."





रौबर्ट क्या कर सकता था.
उसे तो वही करना था जो
उसे करने को कहा जाता था.
वह औरत को गुलाबों के पास ले आया.

और उसे फिर वही अनोखा अहसास हुआ.
उसकी नाक में खुजली होने लगी.
उसकी आँखों में खुजली होने लगी.
और..........

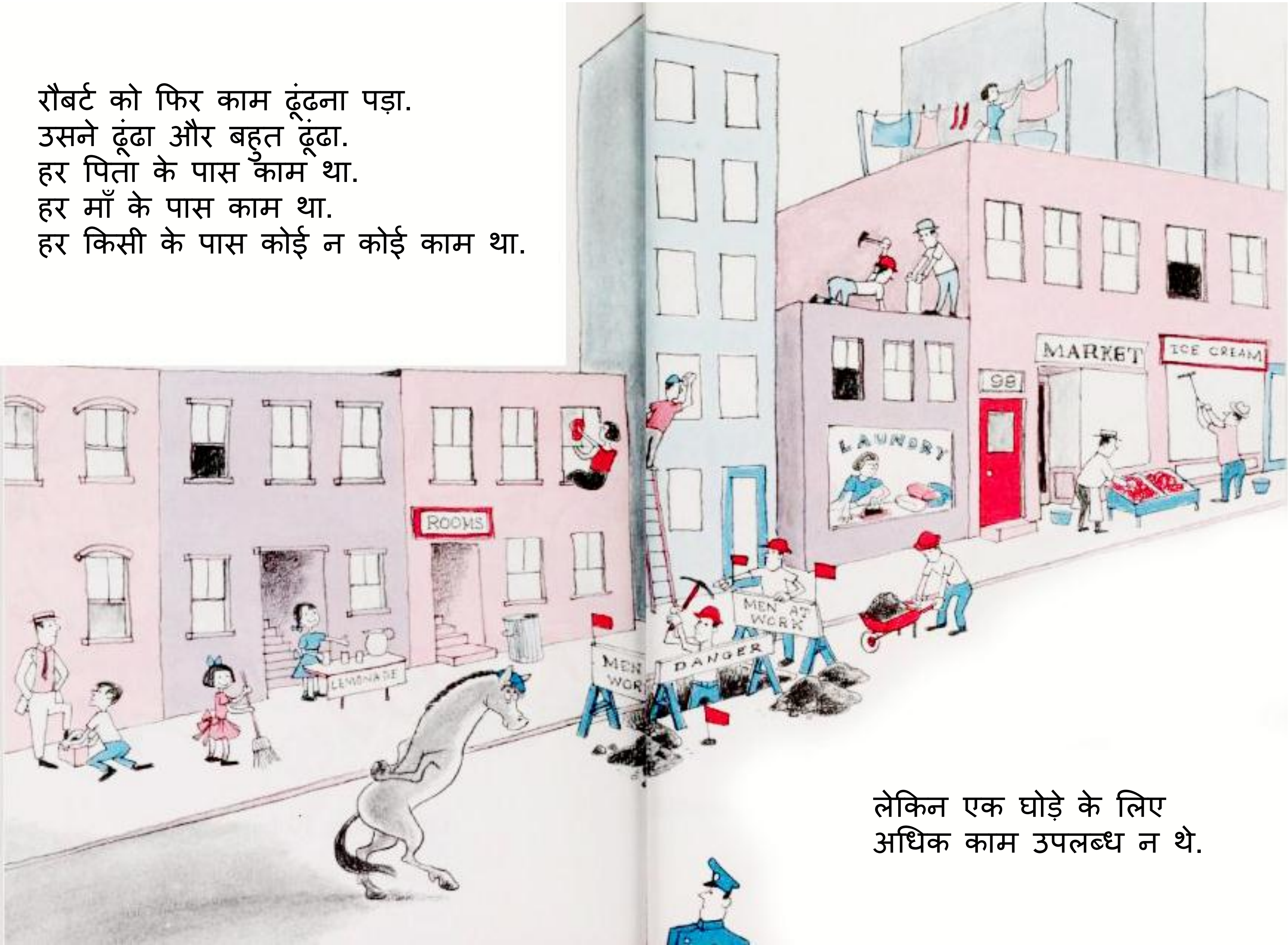


“केरछूऊऊ!” रौबर्ट छींका
वेगन दूर जा गिरी.
फूल दूर जा गिरे.
औरत उछल कर ऊपर गई.
और फूल बेचने वाला
सीधा नीचे जा गिरा.

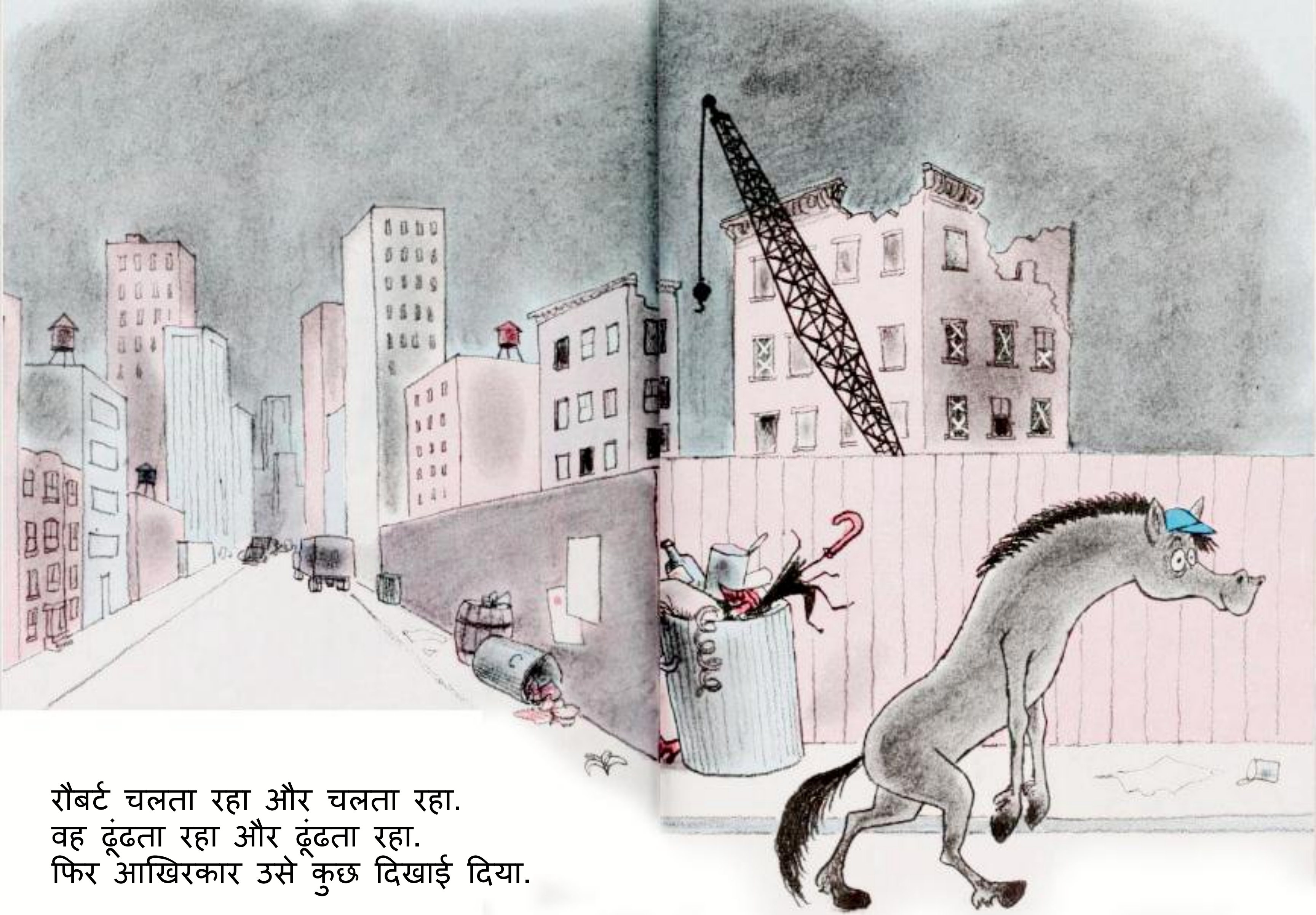


रौबर्ट फिर एक बार
काम से हटा दिया गया.

रौबर्ट को फिर काम ढूंढना पड़ा.
उसने ढूंढा और बहुत ढूंढा.
हर पिता के पास काम था.
हर माँ के पास काम था.
हर किसी के पास कोई न कोई काम था.



लेकिन एक घोड़े के लिए
अधिक काम उपलब्ध न थे.



रौबर्ट चलता रहा और चलता रहा.
वह ढूंढता रहा और ढूंढता रहा.
फिर आखिरकार उसे कुछ दिखाई दिया.

उसे ऐसा काम दिखाई दिया
जो वह कर सकता था!
वह पुलिस का घोड़ा
बन सकता था!



"मैं भीतर जाऊंगा.
मैं नौकरी के लिए प्रार्थना करूंगा,"
उसने कहा.

जब रौबर्ट बाहर आया तो
वह एक पुलिस का घोड़ा था.

पुलिस स्टेशन





वह एक अच्छा पुलिस का घोड़ा था.
पुलिस का हर प्रकार का
काम वह कर लेता था.





एक दिन रौबर्ट बैंक स्ट्रीट में काम कर रहा था.
कुछ आदमी उस रास्ते पर आये.
तीन आदमी!
उन में से एक के पास एक काला बैग था.
वह बैंक के अंदर गए.

रौबर्ट ने उन्हें देखा ही नहीं.





फिर अचानक......
कोई चिल्लाया......
“सहायता करो! पुलिस! सहायता करो!”

रौबर्ट ने घूम कर देखा.
उसने तीन आदमियों को देखा.
वह लुटेरे थे!
बैंक लुटेरे!





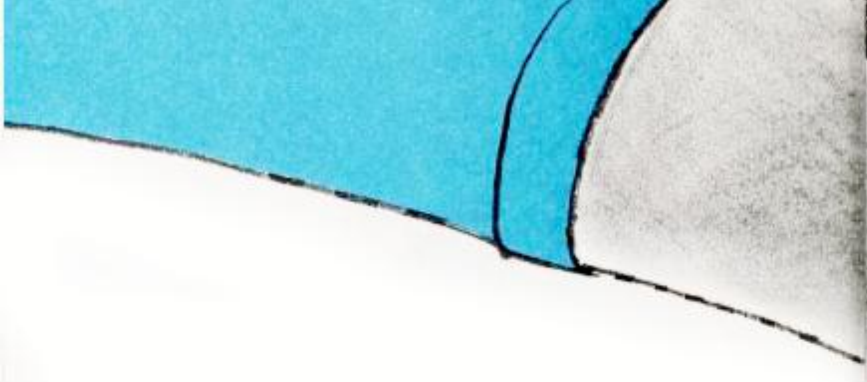
लुटेरे सीधा रौबर्ट की ओर भागे.
उसे गिरा कर वह उसके ऊपर से भाग गए.
और वह दूर भाग गए.

और फिर......
रौबर्ट ने एक गुलाब देखा!
वह बड़ा गुलाब नहीं था.
लेकिन वह एक गुलाब था!
रौबर्ट सोचने लगा.
उसने सोचा कि उसे
तुरंत ही कुछ करना होगा.





रौबर्ट झटपट खड़ा हुआ!
उसे इन लुटेरों को रोकना था!
लेकिन कैसे?
वह उन्हें कैसे रोक सकता था?



रौबर्ट उस गुलाब के पास गया.
उसने अपनी नाक सीधे
उस गुलाब के ऊपर रख दी.
उसने सूंघा.
उसने ज़ोर से, खूब ज़ोर से सूंघा!
और फिर उसे वही पहले जैसा
अनोखा अहसास होने लगा.
उसकी आँखों में खुजली होने लगी.
उसकी नाक में खुजली होने लगी.
फिर......





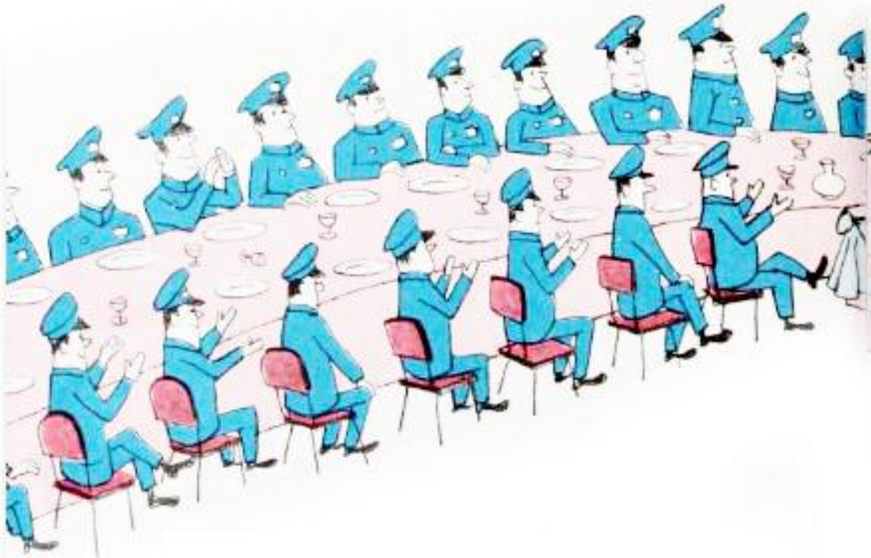
“केरछूऊऊ!”

रौबर्ट ने छींक मारी.
ऐसी भयंकर छींक आज तक
किसी ने न मारी थी.
बिल्लियाँ दूर भागीं.
टोपियाँ दूर गिरीं.
कुत्ते उछल कर ऊपर गए.
पक्षी नीचे गिरे.
धड़ाम! धड़ाम! बंदूकें चलीं.
काला बैग उछल कर ऊपर गया.
और तीनों लुटेरे
सीधे नीचे जा गिरे.

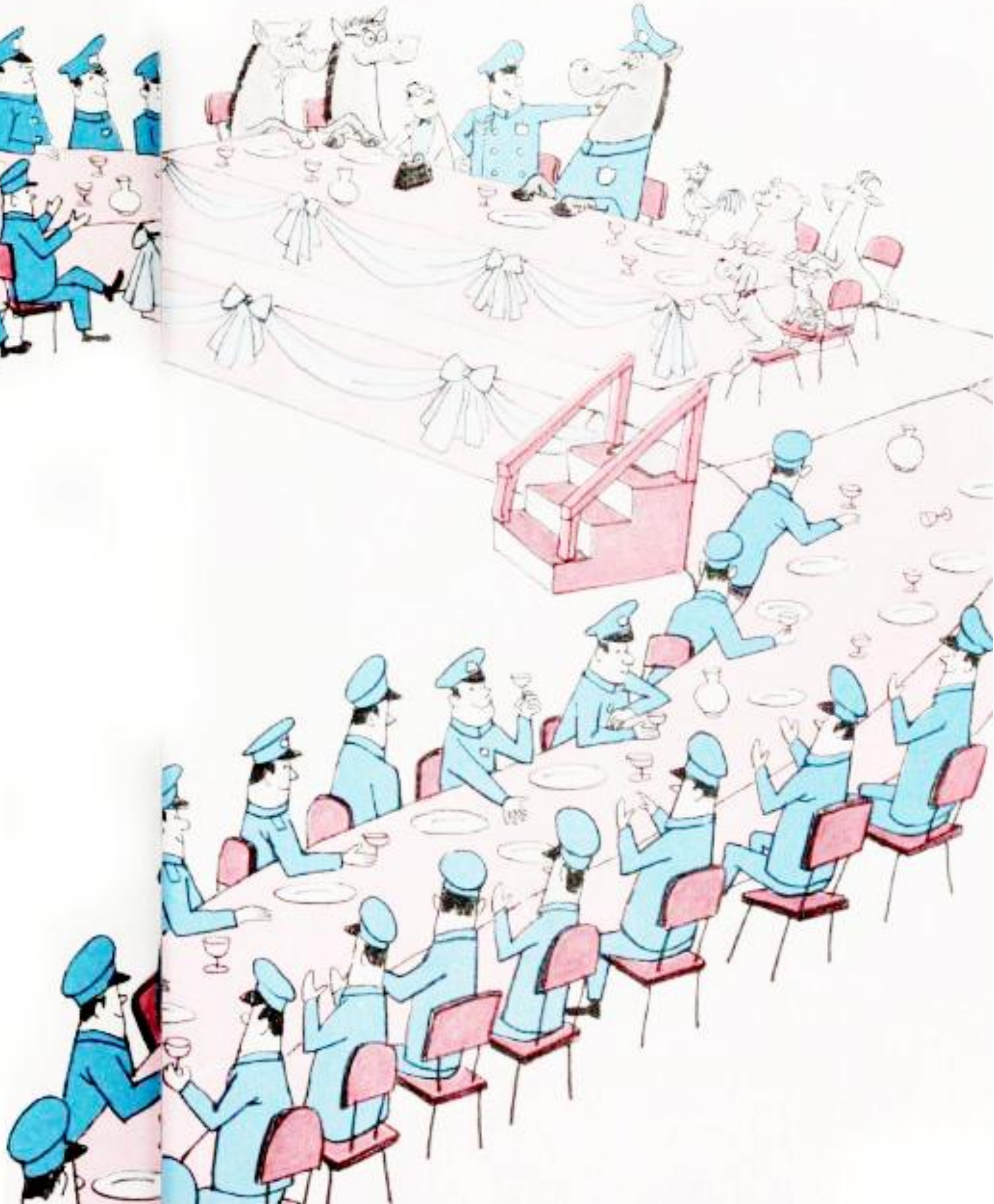




“हुर्रे! हुर्रे, रौबर्ट!”
सब एक साथ चिल्लाये.
बैंक के लोग प्रसन्न थे.
पुलिसवाले प्रसन्न थे.
हर कोई प्रसन्न था.
रौबर्ट ने लुटेरों को रोक लिया था!
उसने छींक मार कर लुटेरों को गिरा दिया था!

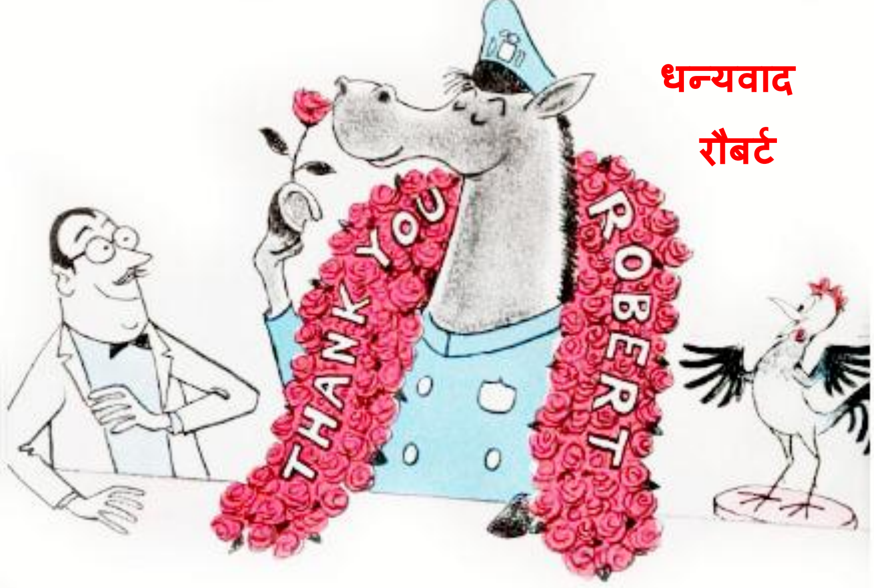


अगले दिन एक पार्टी का
आयोजन किया गया.
यह पार्टी रौबर्ट के सम्मान में थी.
उसके माता और पिता आये.
फार्म के उसके मित्र आये.
डाक्टर आया.
सारे पुलिसमैन भी आये.
फिर उनमें से एक खड़ा हुआ.
“रौबर्ट,” उसने कहा.
“तुम्हारे लिए मेरे पास कुछ है.”





"गुलाब!" डाक्टर चिल्लाया.
"अपनी टोपियाँ पकड़ लो.
छींक आने वाली है!
रौबर्ट छींक मारकर हम सब को
शिकागो फैंक देगा!"



धन्यवाद

रौबर्ट

समाप्त

रौबर्ट ने फूल को थोड़ा सूंघा.
उसकी नाक में खुजली नहीं हुई.
उसकी आँखों में खुजली नहीं हुई.
फिर रौबर्ट ने ज़ोर से, बड़े ज़ोर से सूंघा.
उसे वह अनोखा अहसास नहीं हुआ.
उस बड़ी छींक ने सब बदल दिया था.
आखिरकार रौबर्ट की सारी छींकें
खत्म हो गई थीं.
और गुलाब के फूल को सूंघ कर
भी अब उसे छींक न आती थी.